कोमोडो ड्रैगन का छुपा हथियार विष

भारी भरकम और कुरूप कोमोडो ड्रैगन की भयावहता में एक और इज़ाफा हुआ है। यह विषधर भी है। पहले माना जाता था कि यह सिर्फ अपने मुंह में बैक्टीरिया को पनाह देता है, जो विष का निर्माण करते हैं। मगर ताज़ा अनुसंधान से पता चला है कि यह स्वयं विष बनाता है।

दशकों से वन्य जीव डॉक्यूमेंट्रीज़ इस विचार को प्रसारित करती रही हैं कि कोमोडो ड्रेगन की शिकारी के रूप में सफलता के पीछे उसके मुंह में भरे विषैले बैक्टीरिया हैं। यह दावा और पुख्ता हुआ जब प्रयोगशाला में कोमोडो की लार का इंजेक्शन देने पर चूहे जान से हाथ धो बैठे। यह मान लिया गया था कि लार में ज़हर कोमोडो का बनाया हुआ नहीं था बल्कि इन सहजीवी बैक्टीरिया ने बनाया था।

मगर अब मेलबोर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया के ब्रायन फ्राई के नेतृत्व में एक टीम ने संरक्षित रखे कोमोडो के सिर का एमआरआई स्कैन कर ज़्यादा सरल जवाब खोज निकाला है - कोमोडो के सिर में एक बड़ी विषैली ग्रंथि होती है। बाद में टीम ने इस बात की पुष्टि एक मरणासन्न कोमोडो के सिर से यह ग्रंथि निकालकर की।

इसके विष में ऐसे तत्व हैं जो रक्त का थक्का बनने से रोकते हैं और रुधिर वाहिनियों को चौड़ा कर देते हैं जिससे रक्त चाप में नाटकीय गिरावट आ जाती है। ड्रैगन के दांत तो काफी तीखे होते हैं लेकिन काटने की क्षमता काफी कम होती है। विष ही है जो इसे शिकार में मदद करता है - शिकार एकदम भौंचक्का रह जाता हैं और संघर्ष तक नहीं कर पाता।

फ्राई का मत है कि ड्रैगन में विष की उपस्थिति की अनभिज्ञता वैसी ही है जैसे पहले माना जाता था कि ग्रेट व्हाइट शार्क में दांत नहीं होते और इसलिए ये प्लवक (पानी में रहने वाले सूक्ष्म जीव) भक्षी होंगी।

यह अध्ययन इस बात की संभावना को भी बल देता है कि अभी तक का सबसे बड़ा विषैला प्राणी 5.5 मीटर लंबा, विलुप्त मेगालेनिया लिजार्ड, कोमोडो का पूर्वज हो। ***(स्रोत फीचर्स)***